International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2016; Page No. 15-17

सामाजिक समरसता के मूल सिध्दांत : सतनाम धर्म

राजकुमार लहरे

प्रो. सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय पी डी वाणिज्य एव कला महाविद्यालय रायगढ़ छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

भारतीय समाज में विदेशी आक्रमण तथा देशी राजाओं के उदासीनता के कारण राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सॉस्कृतिक व्यवस्था विखण्डित होता गया। लोग राजभवन से ही नहीं वरन् आस्था के केन्द्रों से भी निराश होते गये। लोगों को समन्वय की भावना एक दूराशा लगने लगा। जिससे समाज जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, क्षेत्रवाद, रंग, धर्म, आर्थिक उॅच–नीच, भेदभाव, छुआछूत, आडम्बर, पाखण्ड से घिरा व बॅटा था तथा व्यक्ति एक दूसरे को हेय की दृष्टि से देखते थे। तब लोगों का भविष्य अंधकारमय व दिग्भ्रमित रहा। विकास और समरसता की बातें सोचना या करना दूर की कौड़ी लगता था– कोरा कल्पना। इसका प्रभाव छत्तीसगढ़ में भी पड़ा। *'छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया'* छलने का माध्यम बन गया। चरम पंथियों का समाज में बोलबाला के कारण देश जैसी स्थिति इस क्षेत्र में भी हो गया था; ऐसी परिस्थति में सम्पूर्ण मानव जाति के सम्मान के लिए समान व सर्वांगीण विकास का मार्ग संत बाबा गुरुघासीदास जी ने सतपंथ प्रवर्तित कर किया। उन्होंने कहा कि सतनाम धर्म ही सच्चा मानवधर्म है। *सत्य ही ईश्वर है तथा सत्य ही मानव का आभुषण है और सभी धर्मों का मूल है। तथा सादा जीवन, उच्च विचार एवं स्वस्थ जीवन, निरोगी काया* जैसे उदात्त स्तरीय मानवीय भाव को नैतिक शुध्दि तथा व्यवहारिक बुध्दि से पाना संभव है। जब इस धरती पर राम, कृष्ण, ईसामसीह, मुहम्मद पैगम्बर, भगवान बुध्द, स्वामी महावीर, गुरु नानक, कबीर आदि नहीं थे; तब कौन–सा धर्म था ? सृष्टि कैसे हुई ? इन्हें ध्यान, योग, साधना से अंततः क्या मिला ? इसी का उत्तर है– प्राणिमात्र के प्रति सतनाम अर्थात् सतधर्म। विश्व का ऐसा कोई संत, गुरु, महात्मा, योगी ज्ञानी या धर्मग्रंथ नहीं है, जो सत पर आश्रित न हो। धर्म का अर्थ होता है– जिसे धारण कर व्यवहार में उतारा जा सके। सतमय जीवन ही लोक कल्याणकारी होता है। अतः लोगों को सतनाम धर्म के रुप में अपनाना चाहिए। जिससे सभी समसामयिक समस्याओं का समूल निवारण हो सके।

मूल शब्द: अमृत, पंथ, समाज, सतनाम, नशा, भ्रुण, स्वच्छ, स्त्री–विमर्श, ध्यान, योग, साधना, कोरा–ज्ञान।

1. प्रस्तावना

विश्व–सृष्टि को समझना तथा व्याख्या करना; जहॉ समाज में ईश्वर का स्थान सर्वोपरि माना जाता हो, एक कठिन विषय है। परमात्मा के साक्षी अपने आपको बताने वाला ऋषि–मुनि, सिध्द–योगी, साधु–संत, महात्मा वेश बदलकर मत–मतांतर ही घोषित करते रहे। जो कालांतर में समाज को विभिन्न जाति, वर्ग, पंथ, सम्प्रदाय, रंग, रुप, धर्म में बॉट दिया और इन्हीं भुल–भुलैया रास्ता को कल्याण के मार्ग बताकर लोगों को गुमराह करते रहे। गृहत्याग को मोक्ष के लिए अनिवार्य घोषित किया गया। जिससे समाज का विकास के बजाय राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सॉस्कृतिक एकता मनोवैज्ञानिक रुप से छिन्न–भिन्न हो गया और लोग के जीवन में उॅच–नीच, भेदभाव, छुआछूत, आडम्बर, पाखण्ड, दिखावा जैसे दुर्गुण घर करते गये तथा अपने को दूसरों से श्रेष्ठ समझने लगे। समरसता, समन्वय, एकता, अहिंसा, त्याग, सेवा, समता, प्रेम, सहभागिता कपूर की तरह उड़ता गया। लोग प्रतिस्पर्धा के भाव से एक–दूसरे को देखने लगे, सिससे सुख–शांति जीवन से जाता रहा। परिणामतः समाज में जाति, वर्ग, स्मप्रदाय लिंग, रंग, स्तरभेद, वैमनस्य, स्वार्थ, मोह, काम, क्रोध, हिंसा का वर्चस्व होता गया। ऐसी परिथिति में राज व समाज को सही दिशा देने के लिए बाबा गुरुघासीदास जी ने सत्य–मार्ग को लोगों को सुझाया। भेदभाव को व्यक्ति, समाज, देश, संसार के विकास में बाधक कहा। गुरुजी ने सत्य को सृष्टि का आधार व समस्त सुख, ज्ञान/विज्ञान का मूल तथा सत्य मार्ग से ही सभी समस्याओं का उन्मूलन हो सकता है, ऐसा ज्ञान लोगों को दिया।

सत्य का अर्थ व स्वरुप– संसार में व्यक्त/अव्यक्त ज्ञात/अज्ञात शक्ति का नाम ईश्वर है। जो ध्वनि, रुप, गुण, रेखा में व्यक्त हो रहा है। सत का अर्थ होता है– अमर, अनश्वर, जड़–चेतन के कण–कण में व्याप्त शक्ति। जिसको अनुभव किया जा सकता है–देखा नहीं। पंचतत्व– वायु, जल, अग्नि, धरती, आसमान ईश्वर नहीं वरन् रुपायित हो सकता है। सत्य इन को चालित करने वाला है। जो बिन्दू में समाया हुआ है; वही ईश्वर हो सकता है– सत्य। कामायनी में प्रसाद जी कहते हैं– किसके षासन पर यह महाप्रलय हुआ।

> ''विश्व देव सविता या पुषा, सोम, मरुत, चंचल पवमान,
> वरुण आदि सब घुम रहे है किसके शासन में अम्लान ?
> किसका था भ्रू भंग प्रलय सा जिसमें ये सब विकल रहे,
> अरे! प्रकृति के शक्ति चिन्ह ये फिर भी कितने निबल रहे।''
>
> कामायनी : प्रसाद, आशा सर्ग पृ. 19

इसी शक्ति के संदर्भ में कृष्ण कन्हैया शानू ने सत्य को स्पष्ट करते हुए कहा है– प्रकृति का नियम षाष्वत है वही सत्य है और सत्य जिसका पहचान या अस्तित्व हो वही सतनाम है।.....प्रकृति ही सत है और उसी का नाम सतनाम है। सत्य ही ईश्वर है और नाम अमर है। अमरत्व ही अमृत है जिसका सेवन, ग्रहण या व्यवहार में उतारने से व्यक्ति अमरत्व को प्राप्त कर सकता है। जिसे ज्ञानियों ने महारस या ब्रम्हसुख कहा तथा उसी को वैज्ञानिकों ने गुरुत्वाकर्षण, ध्वनि, अदृश्य तरंग, शक्ति आदि कहा है। जो अदश्य बिन्दू तक में समाया है।

1. सत के अंजोर होगे गॉव, गली, खोर गुरुघासी बबा मोर
   जग दुनियॉ म गुॅजे सतनाम हो।
   कन–कन समाये हावय सत दुनियॉ म ग
   रुप रंग चारोलोक ओखर बनाये ग

जिनगी म हे सतनाम सार।
2. सतनाम, सतनाम, सतनाम सार, गुरु महिमा अपार
सत के तैंय गंगा बहाइदे।

1. **मानव–मानव एक समान–** अर्थात् सामाजिक समरसता– मानव–मानव में कोई अंतर नहीं। सद् साहित्य में कहीं भी भेदभाव वर्णित नहीं है। कुछ लोगों ने इसका स्वार्थमय गलत व्याख्या किया है। समाज में जाति–पाति, छुआछूत, भेदभाव मानव निर्मित है। इसलिए यह निराधार और व्यर्थ है तथा जो व्यक्तिगत स्वार्थ पर आधारित है। इसका लक्ष्य सामाजिक समरसता को भंग कर अपना हित साधना है। स्त्री–पुरुष का जीवन प्रणाली एक समान है। यही स्त्री–विमर्श का भव्य रुप है। आज भी बे–रोकटोक आस्था से विभिन्न मतावलंबी गुरु–दर्शन हेतु गिरौदपुरी जाते हैं तथा सत्य की अनुभूति करते हैं। जहॉ किसी तरह से भेदभाव नहीं है। इसीलिए बाबाजी के अनुयायी कहते हैं–

छोटे–बड़े सबो झन जम्मा मइपीला
मन के मनौती ल मना लेतेंन हो।
मनखे के एक जात नर–नारी बने हे
हॉड़–मास एक सॉस जिनगी म लय हे।
जात–पात रुप रंग मनखे बनाये हे
मोर–तोर तोर–मोर कहिके सनागे हे।
घाट–बाट गली–पारा देखव यही बॉटे हे
कोनो इहॉ संग नइ दय सतनाम सार हे।

2. **सादा जीवन उच्च विचार–** एक कहावत है कि 'तेते पॉव पसारिये जेति लॉम्बी सौर' अर्थात व्यक्ति को दिखावा व आडम्बर से हमेषा बचकर क्षमता के अनुरुप जीवनयापन करना चाहिए। सादगीपूर्ण रहन–सहन तथा क्षमता भर खर्च करने से घर–गृहस्थी प्रबंध उत्कृष्ट रहता है तथा विचार हमेशा उच्च अर्थात् विवेक पूर्ण हो। किसी अन्य के प्रति कभी भी मन में हिंसा, अपमान या दुख पहुचॉने की चेष्टा न हो। व्यक्ति को स्वच्छ, सुपाच्य, प्रकृतस्थ व शाकाहारी होना चाहिए। इसीलिए बाबाजी ने दिनचर्या के नियमन की बात करते हुए मांसाहारी और अति भोजन से बचने की सलाह दी है। यही *'स्वस्थ जीवन, निरोगी काया'* का गुरुजी द्वारा दिया मूलमंत्र है।

सादा तोर तन बबा, सादा तोर मन हे
सादा आहार, सतमारग गमन हे
कहेव यही सुखी जीवन सार।
तन ल सोहय बाबा सत व्यवहार ग
निरमल बानी तोर मन अनुहार ग।
जुरमिल रहेव बबा जम्मा ल सुझायेव ग
भटकत हंसा ल अमरलोक दिखाये ग।
मास–मदिरा निषा–पानी जम्मा ल तियागव ग
कहे गुरुघासी बबा जिनगी सजालव ग

3. **नशा और व्यभिचार से बचना–**समाज में समरसता के लिए स्त्री–पुरुष का सहज–संबंध, घर–गृहस्थी में सामंजस्य, समाज और राजव्यवस्था के लिए अनिवार्य है। और इसके लिए दोनों में विस्वास जरुरी है। क्योंकि ये एक गाड़ी के दो पहिए की भॉति होता है। इसके लिए आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। नषा मुक्ति के प्रति सर्वप्रथम सामाजिक जागरुकता का कार्य– *'बीड़ी मत पीयो संतो मुखड़ा जलतु है'* कह कर बाबाजी ने किया। और कहा कि, व्यक्ति को किसी भी प्रकार का नशा नहीं करना चाहिए, क्योंकि *नशा नाश का जड़ है।*

दारू, गॉजा, मद संगी मन ल मताये तोर
जीवन ल राख करे, जिनगी नसाये तोर
यही करही एक दिन खुवार, हो संतो चेति करव हो।
घर–बार मया मोह बिगाड़े समाज हे
तोर तन–मन सब बस कहॉ आज हे।
तीरथ बरत जाथस जिनगी सॅवारे बर
घट ल जाने नहीं सत के बनाये ल।
सतरंगी दुनियॉ देख करे व्यभिचार ग
दुख पाये मनभरहा सपना अपार ग।

4. **प्रेम, अहिंसा, समता, सेवा और करुणामय व्यवहार–**बाबाजी ने मानव से मानवेत्तर अर्थात् जीव– जगत/प्राणिमात्र के लिए दया, प्रेम, करुणा, अहिंसा, अपनापन रखने को कहा। इसीलिए दोपहर के बाद हल चलाने से मना किया। *'मत मारो रे कसइया मैं तो गइया हवॅव रे'* जैसे गीत समाज में आज भी प्रचलित है। जो सामाजिक रुप से गोरक्षा के प्रति जागरुक एवं प्रतिबध्द होने को दर्षाता है।

छोटे–बड़े भेदभाव मनखे बनाये हे
जुरमिल रहव संतो तभे ग उबार हे
तोर जिनगी हवय ग अमोल।
जीव–जन्तु रुखराई सत के निरमान हे
जिनगी म दुख सुख एके समान हे।
चंदा–सुरुज देखव मया बगराये ग
देस–दुनिया उही कइसे सजाये हे।
आगी पानी पवन ह सेवा समझाये हे
धरती सरग देखव सत ह समाये ग।

5. **झूठ, मद्यपान, पाखण्ड, आडम्बर, अंधविश्वास तथा अपृश्यता का परित्याग–**गुरु घासीदास जी ने आडम्बर, रुढ़िवाद, पाखण्ड, पर स्त्रीगमन तथा झूठ एवं फरेबी से बचने के लिए अपने शिष्यों को कहा है। इसके लिए व्यक्ति को सत्य मार्ग का चुनाव कर चलने को कहा। जिससे मानव के साथ–साथ प्राणिमात्र का सर्वांगीण विकास हो सके। नश्वर संसार को बाबाजी ने *'यह संसार कागज के पुड़िया, पानी परत भीग जाना होवे हो* कहा है। अतः क्षण भंगुरता व जीवन की महत्ता को प्रतिपादित किया है।

घट–घट म बसे हे सतनाम, खोजे ल हंसा कहॉ पाबे रे
जग जिनगी के यही हवय सार।
छुआछूत भेदभाव मनखे बनाये हे
देख तोर तन बाबू जम्मा सनाये हे।
मनखे के जात होथे एके बरन ग
गुॅनव बिचारव तुम यही तरन ग।
कहॉ भुलाये मन माते मतंगी जोर
समे संग चेत करव दिन बुड़े संगी तोर।

6. **वसुधैव कुटुम्बम् की भावना–** धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को पाने के लिए ज्ञान, ध्यान, योग तथा सद्कर्म की ओर सभी को प्रवृत्ति हो जाना चाहिए। इसके लिए जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, रंगभेद/रुप भेद से उपर उठकर सोचना होगा। गुरुजी ने कहा कि *एक धुआ मारे, तौनो ह तोर बरोबर आय* क्योंकि भ्रुण ईश्वर भी हो सकता है और मानव भी। अतः उसे मारना ठीक

नहीं। यह भी जीव हत्या ही है। अर्थात त्तकालीन समाज में व्याप्त भ्रुणहत्या का विरोध किया था। इस तरह से स्त्री–पुरुष समानता की बात इन्होंने कहा। स्त्री–पुरुष भेदभाव को रोकने पर ही सम्पूर्ण विश्व एक परिवार की भॉति हो पायेगा। जहॉ लोग मिलजुल कर रह सकेंगे। जिसे वियोगी हरि जी ने 'विश्व मंदिर' निबंध में व्यक्त किया है।

जग दुनिया ह चलय सत के भरोसा ग
संग–संग जीलव तुम बनजव निहोरा ग।
जातपात मन भेद मनखे बनाये हे
जम्मा रुपरंग देखव सत ह समाये हे।
अब तो समझव दुखिया के दुख ल
हीनहर कोनो नइहे समे के फेर ग।
नर–नारी एक होथे देखलव संगी तुम
चार दिन सॉसा हे मन ले जावव झूम।

7. **सत्य ही ईश्वर है** अर्थात सत्य ही मावन जीवन का परम लक्ष्य होना चाहिए सत्य मन, वचन, कर्म से झलकना चाहिए। सतमार्ग पर चलने से व्यक्ति दुःख तो पाता है, लेकिन जीत उसी की होती है। इसीलिए मुण्कोपनिषद में *'सत्यमेव जयते'* कहा है।

सतनाम जीव सार हे, निरंजन बनगे डार।
तीन देव शाखा बने, पत्र बनिन संसार।।

अर्थात सत्य सृष्टि का आधार व जीवन का सार है। इसी से संसार चलायमान है। बाबाजी सत्य को मूर्त रुप देने व सत्य पर विजय पाने के प्रतीक में जैतखाभ सबसे पहले गिरौदपुरी में गड़ाया। फिर भण्डार, खडुवापुरी, तेलासीपुरी, अमरपुरी में स्थापित किया गया। इसे सतनामी अर्थात सत के अनुयायियों ने सत के प्रचार–प्रसार हेतु आज भी स्थापित करते हुए, चौका–आरती भजन के साथ सतमार्ग पर चलने का संकल्प लेते हैं।

जैतखाम ल गड़ावव, सादा झंडा लहरावव
हो संतो मोर जीवरा के होहि ग उबार।
आगे ग दिसम्बर पंथी मंगल भजन गावव
गॉव–गॉव गली म तुम मेला ल लगावव
सतनाम गुन गावव।
लइका सियान जुरमिल गुरुद्वारा जावव
सादा के रंग म तुम जम्मा रंगी जावव
गुरु घासी ल मनावव।
गुरु के सरन जाके भाग ल सिरजावव
महिमा महान हावय सब्बो ल बखानव
सत मारग म जावव।

बाबाजी का जन्म 18 दिसम्बर 1756 के दिन सोमवार सोनाखान अंचल के ग्राम गिरौदपुरी में महंगु–अमरौतिन के घर में, जो आज जिला बलौदा बाजार–भाटापारा, छत्तीसगढ़ में स्थित है, हुआ था। आज गिरौदपुरी सतधाम के रुप में विख्यात है। जहॉ पवित्र स्थान चरणकुंड, अमृतकुंड, पंचकुंड, छाता पहाड़, विश्व प्रसिध्द जैतखाम, तपोभूमि, जन्मस्थल, बाहराडोली विशेष दर्शनीय है। जहॉ वर्ष पर्यन्त लोग दर्शनार्थ आते हैं तथा मेला–सा लगा रहता है।
अतः इतिहास, समाज, साहित्य, दर्शन/अन्य कोई विद्या हो या फिर आज के समसामयिक भेदभाव, तनाव, संघर्ष, युध्द–उन्मूलन का आधार सतमार्ग ही है। क्योंकि सत्य ही सब में समाया हुआ है। इस बात को गुरुजी ने रावटी लगाकर लोगों को समझाया। गुरुजी एक भविष्य द्रष्टा थे; और मानव समाज के जीर्ण–शीर्ण होते वर्तमान स्थिति से चिंतित रहे। जीवन भर लोगों के एकता एवं मुक्ति के लिए समर्पित हो सेवा करते रहे। अतः बाबा गुरुघासीदास जी मूलतः समाज सुधारक थे।

संदर्भ सूची

1. सतनाम ध्यान योग : एक दिव्य मार्ग, लेखक– सत्यर्षि वेदानंद दिव्य सतनाम संस्थान एवं गुरुधासीदास चेतना संस्थान, भिलाई नगर दूर्ग छ.ग.।
2. सत्यालोक पत्रिका, अंक 15, दिसम्बर 2013।
3. सतनाम संदेश पत्रिका, अंक 12, दिसम्बर 2014।
4. सत्यालोक पत्रिका, अंक 14, नवम्बर 2013।
5. सतनाम संदेश पत्रिका, अंक 09, सितम्बर 2014।
6. सतनाम संदेश पत्रिका, अंक 05, मई 2014।
7. सतनाम संदेश पत्रिका, अंक 04, अप्रेल 2014।
8. गुरु घासीदास जीवन चरित्र लेखक नम्मूदास मनहर 5वॉ संस्करण 2014।
9. गुरु अमरदास जीवन चरित्र लेखक नम्मूदास मनहर दूसरा संस्करण 2013।
10. राजा गुरु बालकदास जीवन चरित्र लेखक नम्मूदास मनहर, चर्तुथ संस्करण 2013।
11. प्रसाद, जयशंकर, कामायनी : आशा सर्ग पृ. 19।
12. हिन्दी विशिष्ट कक्षा 10एवं12वीं छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल रायपुर
13. लहरे, राज कुमार, निरगुनिया, मंगलम् प्रकाषन दिल्ली 2016।